BRINGING RAIN TO KAPITI PLAIN

(BASED ON A NANDI TALE)

BY VERNA AARDEMA

About the tale

The tale was discovered in Kenya, Africa more than seventy years ago by the famous anthropologist Sir Claud Hollis. Sir Claud camped near a Nandi village and learned the native language from two young boys. He learned riddles and proverbs from the Nandi children, and most of the folktales from the Chief Medicine Man. This tale reminded Sir Claud of a cumulative nursery rhyme he had loved as a boy in England, and also familiar to us "The House That Jack Built." So he called the story "The Nandi House That Jack Built" and included it in his book The Nandi - Their Language and Folktales, published in 1909. Vera Aardema has brought the original story close to the English nursery rhyme by putting in a cumulative refrain and giving the tale the rhythm of "The House That Jack Built."

रिमझिम करती बारिश आई

वेरना आरडीमा

अनुवादः अरविन्द गुप्ता

(एक अफ्रीकी 'नन्दी' लोककथा)

एक अफ्रीकी 'नन्दी' लोककथा का छंदों में रूपांतरण। एक बार अफ्रीका के जंगलों में भयानक सूखा पड़ता है। घास सूख जाती है। मवेशी मरने लगते हैं और सभी ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। तब वीर किपाट एक तीर चलाकर काले बादलों में छेद करता है और उनसे रिमझिम करती हुई बारिश आती है - जिससे घास हरी-भरी हो जाती है और खुशहाली छा जाती है।

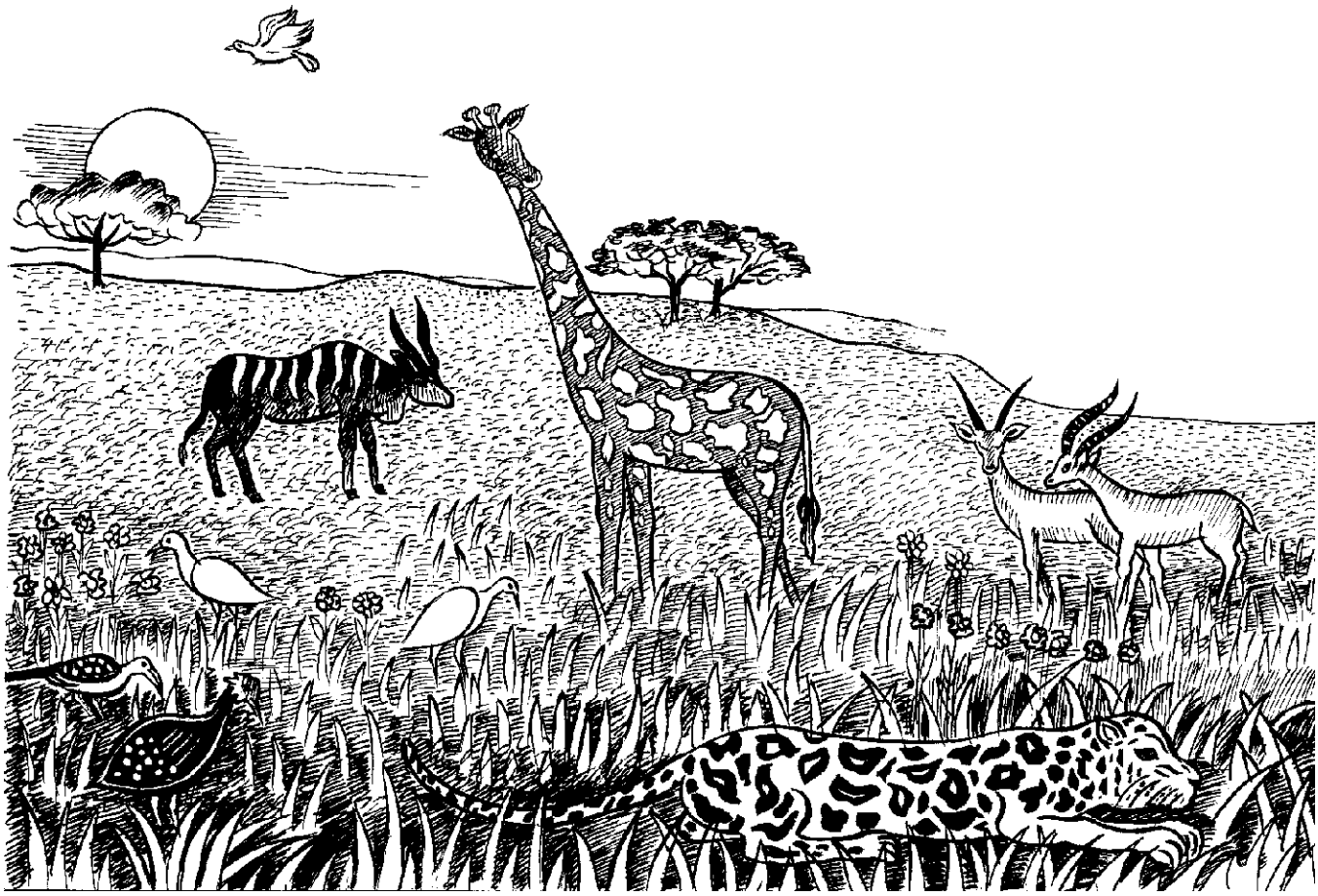

This is the great
Kapiti Plain,

All fresh and green
from the African rains -

A sea of grass for the
ground birds to nest in,

And patches of shade for
wild creatures to rest in;

With acacia trees for
giraffes to browse on,

And grass for the herdsmen
to pasture their cows on.

अफ्रीका के एक कोने में
बड़ा सा एक मैदान
रिमझिम बारिश की बूंदें
फूंकें उसमें जान

हरी घास में पूरे दिन भर
पक्षी खेला करते
बड़े चाव से हरी पत्तियां
सभी जानवर चरते

ऊंचे पेड़ों के पत्तों को
खा जाते जिराफ
और जानवर गाय-मवेशी
दिनभर चरते घास

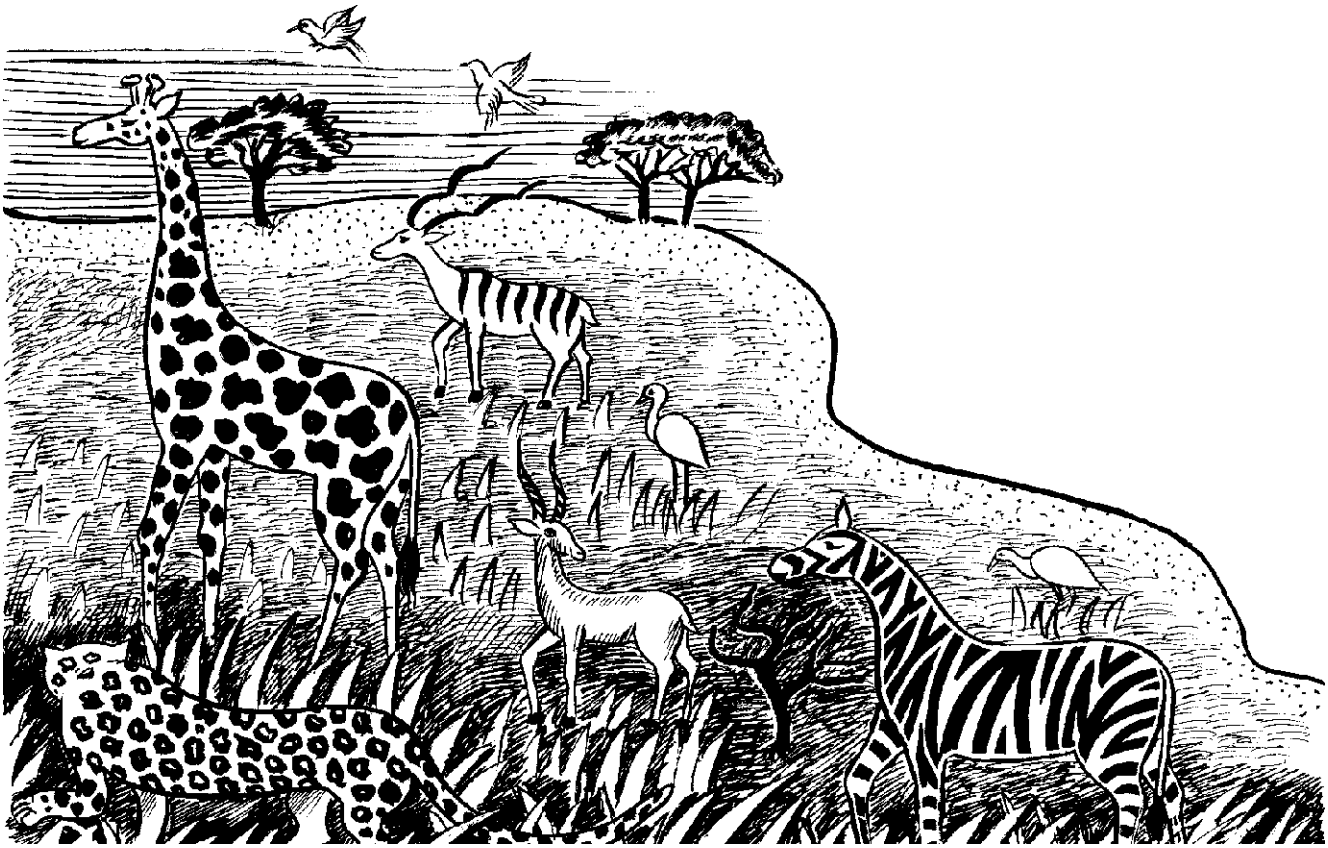

But one year the rains
were so very belated,
That all the big
wild creatures migrated.

एक साल फिर ऐसा आया
साथ भयानक सूखा लाया
बड़े जानवर भागे दूर
मिले जहां पानी भरपूर

Then Ki-pat helped
to end that terrible drought -
And this story tells
how it all came about!

किया किपाट ने अद्भुत काम
बारिश को लाने का काम
इस गाथा में यही कहानी
सच्चा किस्सा, बात पुरानी

This is the cloud,

all heavy with rain,

That shadowed the ground

on Kapiti Plain.

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

This is the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -

The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

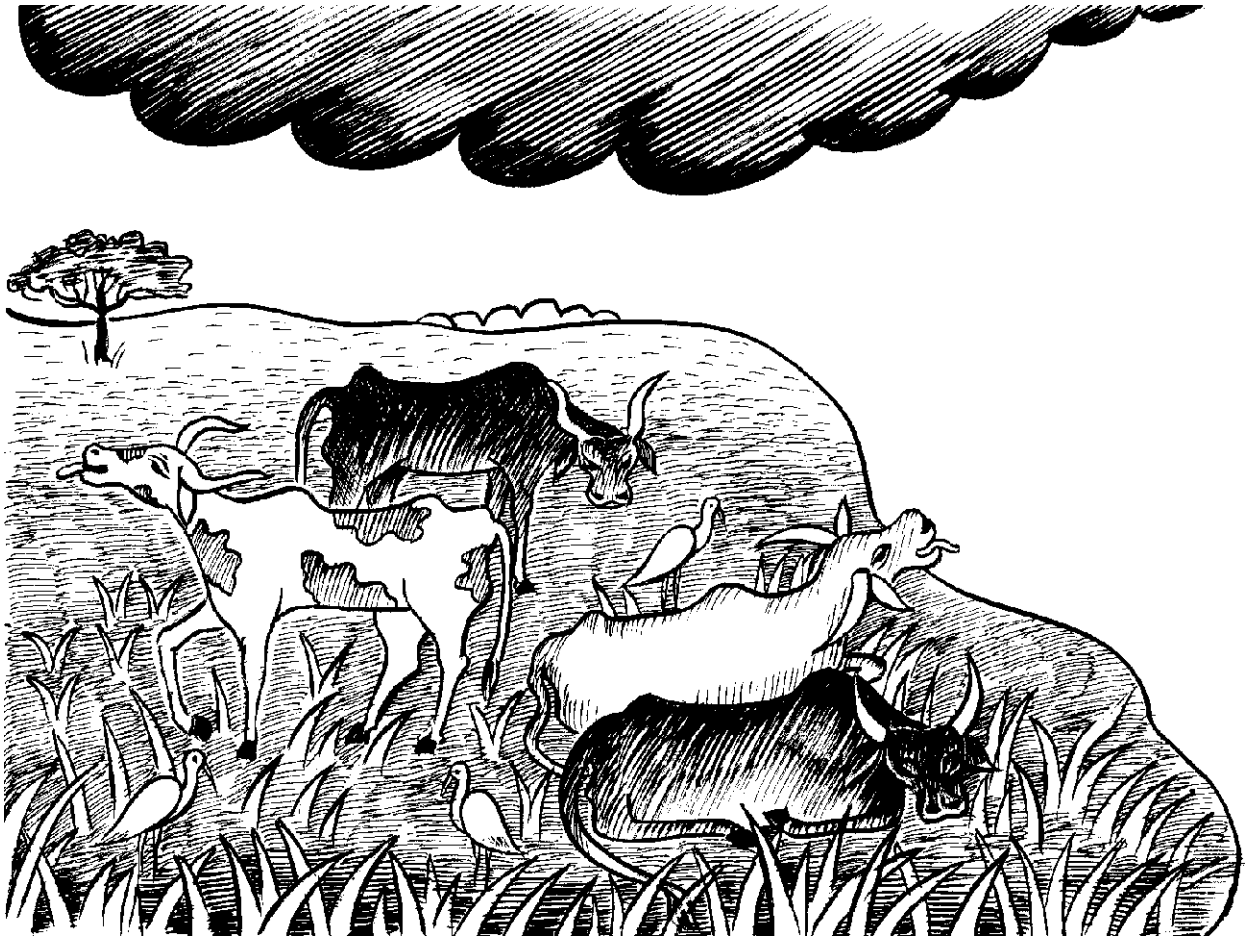

These are the cows,
all hungry and dry,
Who mooed for the rain
to fall from the sky;

To green up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -

The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप-टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास की भूख मिटेगी
तभी बूंद की प्यास बुझेगी

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

This is Ki-pat,
who watched his herd
As he stood on one leg,
like a big stork bird;
Ki-pat whose cows
were so hungry and dry,
They mooed for the rain
to fall from the sky;
To green-up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -
The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप-टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास की भूख मिटेगी
तभी बूंद की प्यास बुझेगी

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

This is the eagle
who dropped a feather,
A feather that helped
to change the weather.
It fell near Ki-pat,
who watched his herd
As he stood on one leg,
like a big stork bird;
Ki-pat whose cows
were so hungry and dry,
They mooed for the rain
to fall from the sky;
To green-up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -
The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तक शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप-टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास की भूख मिटेगी
तभी बूंद की प्यास बुझेगी

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

This is the arrow
Ki-pat put together,
With a slender stick
and an eagle feather;
From the eagle who happened
to drop a feather,
A feather that helped
change the weather.

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे जमाया
जोड़ी दोनों की जब काया
सुंदर एक तीर तब पाया

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

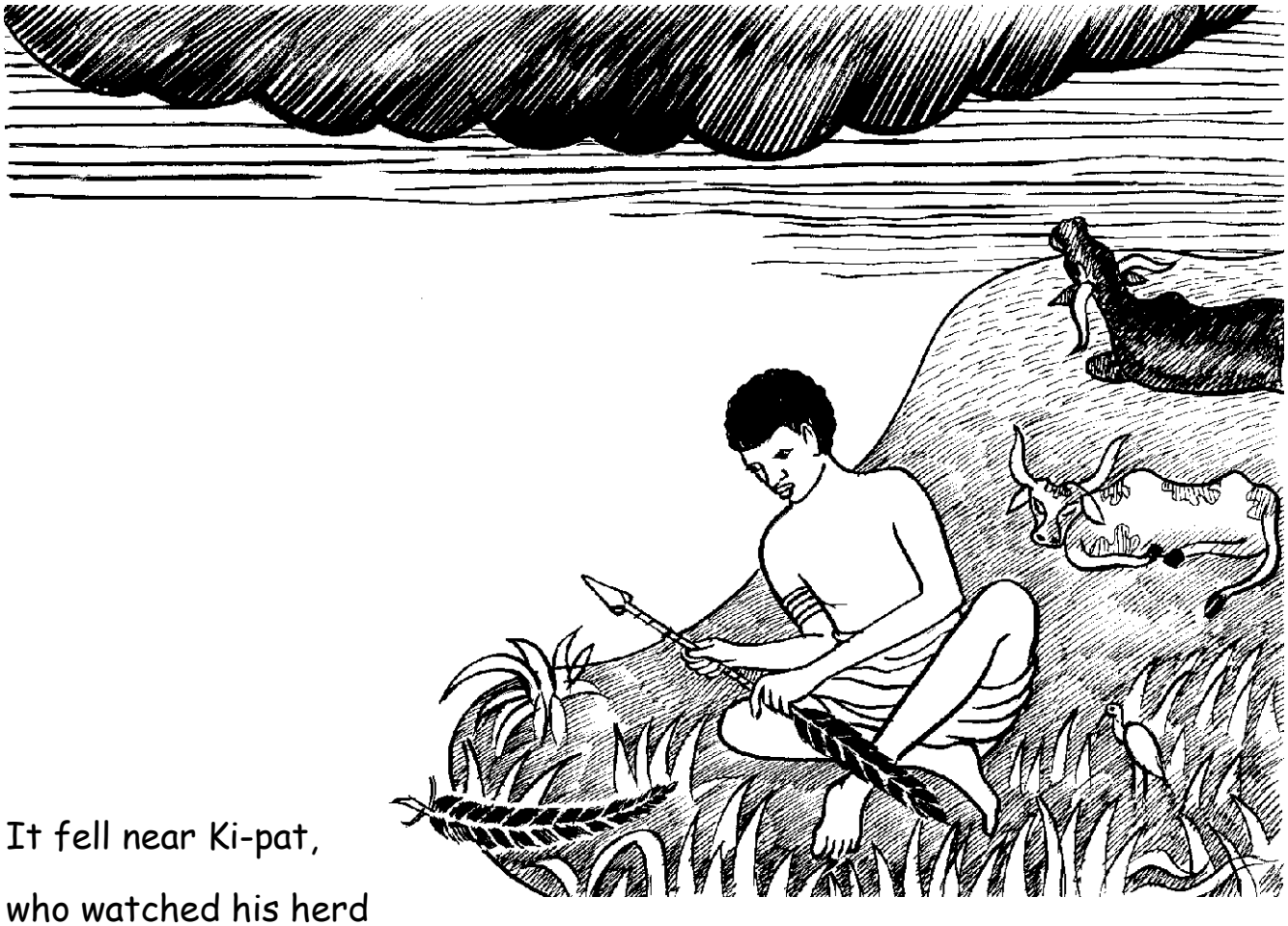

It fell near Ki-pat,
who watched his herd
As he stood on one leg,
like a big stork bird;
Ki-pat whose cows
were so hungry and dry,
They mooed for the rain
to fall from the sky;
To green-up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -
The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप-टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास की भूख मिटेगी
तभी बूंद की प्यास बुझेगी

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

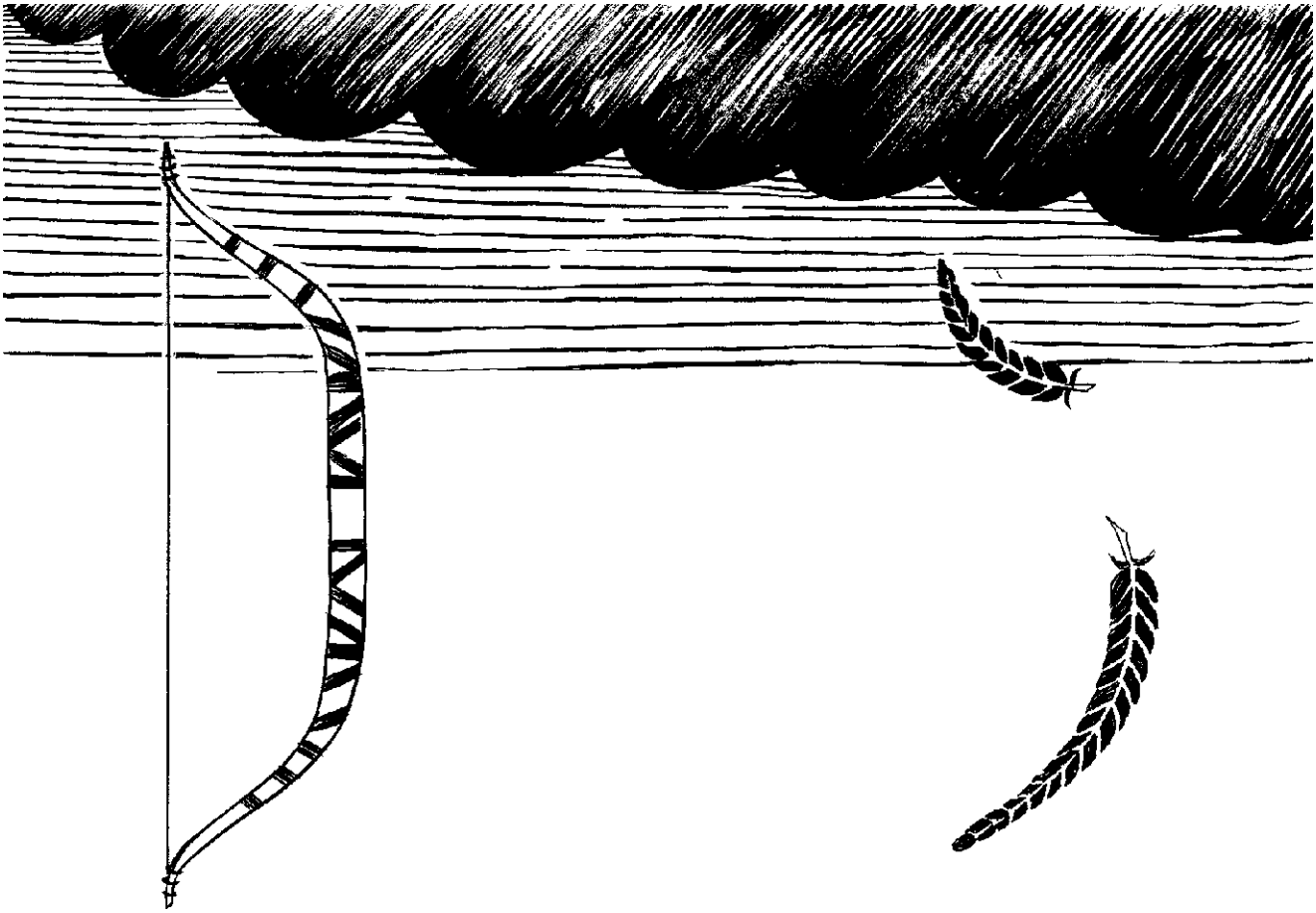

This is the bow,
so long and strong,
And strung with a string,
a leather thong;
A bow for the arrow
Ki-pat put together
With a slender stick
and an eagle feather;
From the eagle who happened
to drop a feather,
A feather that helped
change the weather.

यह वो आलीशान कमान
भारी लकड़ी ऊंची मान
मोटी डोरी इसकी शान
काटे बड़े-बड़ों के कान

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे जमाया
जोड़ी दोनों की जब काया
सुंदर एक तीर तब पाया

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तक शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

It fell near Ki-pat,
who watched his herd
As he stood on one leg,
like a big stork bird;
Ki-pat whose cows
were so hungry and dry,
They mooed for the rain
to fall from the sky;
To green-up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -
The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

पंख गिरा पैरों के पास
जहां खड़ा था वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

This was the shot
that pierced the cloud
And loosed the rain
with thunder LOUD!
A shot from the bow
so long and strong
And strung with a string,
a leather thong;
A bow for the arrow
Ki-pat put together
With a slender stick
and an eagle feather;
From the eagle who happened
to drop a feather,
A feather that helped
change the weather.

जब तीर से बनी कमान
फूटे दिल में सौ अरमान
सींक-पंख का सुंदर तीर
जिसे चलाए किपाट वीर

जब किपाट हो गया अधीर
तब उसने छोड़ा वो तीर
तीर गया बादल को भेद
हो गया उसमें बड़ा सा छेद

बिजली कड़के बादल गरजे
बूंदे टप-टप, टप-टप बरसे
मिट्टी की तब प्यास बुझी
सूखी घास तब हुई हरी

यह वो आलीशान कमान
भारी लकड़ी ऊंची मान
मोटी डोरी इसकी शान
काटे बड़े-बड़ों के कान

फिर किपाट ने पंख उठाया
एक सींक पर उसे जमाया
जोड़ी दोनों की जब काया
सुंदर एक तीर तब पाया

मालूम नहीं कहां से आया
बड़ी चील ने पंख गिराया
गर्मी की तक शामत आई
रिमझिम करती बारिश आई

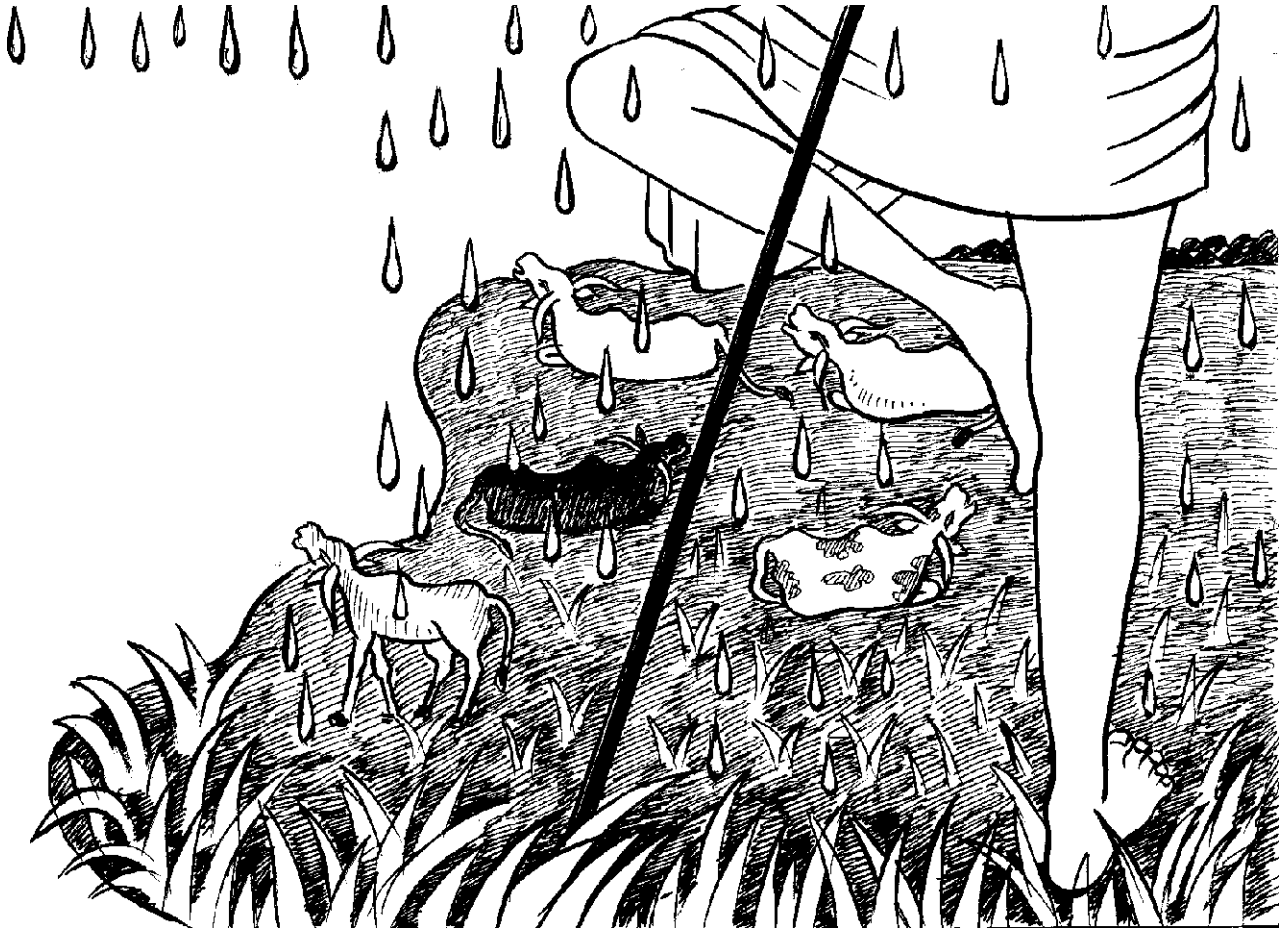

It fell near Ki-pat,
who watched his herd
As he stood on one leg,
like a big stork bird;
Ki-pat whose cows
were so hungry and dry,
They mooed for the rain
to fall from the sky;
To green-up the grass,
all brown and dead,
That needed the rain
from the cloud overhead -
The big, black cloud,
all heavy with rain,
That shadowed the ground
on Kapiti Plain.

दूर खड़ा है एक पैर पर
डंडा लेकर वीर किपाट
देख रहा गायों का झुंड
जैसे हो कोई मेला-हाट

गायें सारी भूखी-प्यासी
दर-दर फिरतीं वे बेचारी
खाने को पत्ता न पान
कौन बचाए उनकी जान

पानी जब टप-टप बरसेगा
वही घास को हरा करेगा
तभी घास की भूख मिटेगी
तभी बूंद की प्यास बुझेगी

गर्मी पड़ी कड़क कर खूब
सूखी हरी घास और दूब
मिट्टी को पानी की आस
कौन बुझाए उसकी प्यास

दूर वहां बादल मौजूद
पानी से बिल्कुल भरपूर
पर बादल से गिरे न बूंद
जनता बैठी आंखें मूंद

So the grass grew green, and the cattle fat!

And Ki-pat got a wife and a little Ki-pat -

हरी घास खा-खाकर गाएं
पूरे दिन जमकर रम्भाएं
फिर किपाट ने ब्याह रचाया
और बाद में पुत्र है पाया

Who tends the cows now, and shoots down the rain,

When black clouds shadow Kapiti plain. END

अब किपाट का छोटा लड़का
करता है रखवाली
वो बादल को तीर मारकर
लाता है हरियाली ।

अंत